ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

12-08-2026

संकल्प व स्वप्न में भी जब अपवित्रता का अंशमात्र न हो तब कहेंगे सच्चे ब्राह्मण, इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाएं पर धर्म न जाए।' ऐसी हिम्मत, ऐसा दृढ़ निश्चय करने वाले किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ भी त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करते हैं, पीछे नहीं हटते।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

When there is no trace of impurity in your thoughts or dreams, you will then be said to be a true Brahmin. For this dharna, it is said: You must not renounce your religion even if you have to die. Those who have such courage and determined faith will never step back from any situation, but will happily have renunciation, toleration, and be able to face anything and remain courageous.